❋ 17 अगस्त 2014 (5-12-78) की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

❋ ज्ञान-

1] पहले तो बाप-दादा दो साथी हैं। अकेला तो हो नहीं सकता। बच्चे भी हैं- आप साथ नहीं रहते हो? वायदा क्या किया है? साथ रहेंगे, साथ चलेंगे, साथ खायेंगे, पीयेंगे। यह वायदा है ना। अभी वायदा बदल गया है क्या? अभी भी वही वायदा है बदला नहीं है। चले गये, ऐसा नहीं हैं। साकार में तो और भी थोड़े समय का साकार साथ था और थोड़ों के लिए साकार का साथ था। अभी तो सभी के साथ हैं। साकार में तो फिर भी कई प्रकार के बन्धन थे, अभी तो निर्बन्धन हैं। अभी तो और ही तीव्रगति है- बाप को बुलाया और हाज़िरा-हुज़ूर।

2] बकरी ईद मनाओ या कोई भी ईद मनाओ। मैं मैं का त्याग करना उसको कहा जाता है ईद मनाना।

3] कर्म करते हुए भी कर्म के बन्धन से मुक्त, सदा जीवन मुक्त है। सतयुग की जीवनमुक्ति का वर्सा तो प्राप्त होगा ही लेकिन अभी के जीवनबन्ध से जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव सतयुग से भी ज्यादा है।

4] क्या करूँ, कैसे करूँ, चाहता हूँ, होता नहीं यह भी मन का बन्धन है। चाहता हूँ कर नहीं पाता तो कमज़ोर हुआ ना। इस बन्धन से भी मुक्त, उसको कहा जाता है निर्बन्धन। जब बाप के बच्चे बने तो बच्चा अर्थात् स्वतन्त्र, इसीलिए कहा जाता है स्टूडेन्ट लाइफ इज़ दी बेस्ट लाइफ। तो आप कौन हो? बच्चे हो या बूढ़े हो? बच्चा अर्थात् निर्बन्धन। अगर अपने को पास्ट जीवन वाले समझेंगे तो बन्धन है, मरजीवा हो गये तो निर्बन्धन।

❋ योग-

1] ''वाह मैं श्रेष्ठ अधिकारी आत्मा'', इस बेहद के अधिकार के नशे और खुशी में रहो तो सदा निश्चिंत रहेंगे।

❋ धारणा-

1] तो अपने जन्म के निजी संस्कार जन्म की पहली स्मृति, जन्म का पहला बोल– **मैं श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा हूँ**, इसको भी भूल जाते हैं।

2] बाप ने कहा शूद्रपन के विकारी संस्कार छोड़ो- आत्मा के विकारी संस्कार रूपी चोला परिवर्तन किया और ईश्वरीय संस्कार का दिव्य चोला पहना, शूद्रपन की निशानियाँ अशुद्ध वृत्ति और दृष्टि परिवर्तन कर पवित्र दृष्टि और वृत्ति विशेष निशानियाँ धारण की, सर्वश्रेष्ठ ते श्रेष्ठ सम्बन्ध और सम्पत्ति के अधिकारी बने- यह भी अच्छी तरह से याद है, लेकिन फिर क्या कहने? जो श्रेष्ठ आत्मायें होती हैं वह संकल्प से भी छोड़ी हुई अर्थात् त्याग की हुई बात फिर से धारण नहीं करती हैं। जैसे धरनी पर गिरी हुई वा फेंकी हुई चीज़ रॉयल बच्चे कभी नहीं उठायेंगे। आप सबने संकल्प धारण किया और यह विकार बुद्धि से फेंके। बेकार समझ, बिगड़ी हुई वस्तु समझ प्रतिज्ञा की और त्याग किया, वचन लिया कि फिर से यह विष सेवन नहीं करेंगे, फिर क्या करते हो? फेंकी हुई चीज़, गन्दी चीज़, बेकार चीज़, जली सड़ी हुई वस्तु फिर उठाकर यूज़ क्यों करते हो? समझा क्या खेल करते हो? अनजाने का खेल करते हो। खेल देखकर तरस भी पड़ता और हँसी भी आती। जानी जाननहार तो बने हो लेकिन बनना हैं करनहार।

...2

3] करनहार बनने का विशेष कार्यक्रम करके दिखाओ। संकल्प द्वारा त्याग की हुई बेकार वस्तुओं को संकल्प में भी स्वीकार नहीं करो। सोचो और स्वयं से पूछो- कौन हूँ और क्या कर रहा हूँ? वचन क्या किया और कर्म क्या कर रहे हैं? वायदा क्या किया और निभा क्या रहे हैं? अपने स्वमान, श्रेष्ठ स्मृति, श्रेष्ठ जीवन के समर्थी स्वरूप बनो। कहना क्या और किया क्या? ऐसे वण्डरफुल खेल अब बन्द करो। श्रेष्ठ स्वरूप, श्रेष्ठ पार्टधारी बन श्रेष्ठता का खेल करो। ऐसी सम्पूर्ण आहुति का संकल्प करो तब परिवर्तन समारोह होगा। इस समारोह की डेट संगठित रूप में निश्चित करो।

4] इस शिवरात्रि पर सेवा के साथ, जिससे अन्य अनेक आत्माओं को परिचय मिले वह तो करेंगे ही, लेकिन साथ-साथ ऐसा संकल्प करो कि परिचय के साथ बाप की झलक देखने या अनुभव करने का प्रसाद भी लेवें।

5] अपनी सर्व जिम्मेवारियां बाप हवाले कर दो तो सब चिंताओ से मुक्त हो जायेंगे।

✺ **सेवा-**

1] चाहे कुमार हो चाहे वानप्रस्थी हो लेकिन सब बच्चे हैं। सिर्फ एक कार्य जो बाप ने दिया है **''याद करो और सेवा में रहो''**, इसी में सदा बिज़ी रहो।